परम्परावादी राजनीति विज्ञान

* परम्परावादी राजनीति विज्ञान कल्पनात्मक होने के साथ-साथ मानवात्मक भी है।
* 'रिपब्लिक' में प्लेटो द्वारा प्रतिपादित 'आदर्श राज्य' की अवधारणा परम्परागत राजनीति विज्ञान का श्रेष्ठतम दृष्टांत को मिलती है।
* कॉर्ट ने विधिक कानूनों को नैतिक कानूनों का अंग बताया था और हीगल ने विश्व के मूल में विश्व-आत्मा को माना।
* वही गार्नर ने 'ए ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्स' में अपने विचार व्यक्त करते हुए ऐसी समस्याओं का उल्लेख किया था कि राज्य को क्या करना चाहिए।
* परम्परागत राजनीति विज्ञान की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।
  (i) कल्पनात्मक और आदर्शी
  (ii) अपरिष्कृत परम्परागत पद्धतियाँ
  (iii) नैतिकता और राजनीतिक मूल्यों पर विशेष बल
  (iv) राज्य एक नैतिक संस्था है।
  (v) काश्नी - औपचारिक - संस्थागत अध्ययन पर बल
  (vi) प्रधानतः संकुचित अध्ययन
  (vii) दर्शनशास्त्र से प्रभावित अध्ययन
  (viii) व्यक्तिनिष्ठ अध्ययन

* फ्रेडरिक पोलक ने राजनीति शास्त्र को दो भागों में बाँटा है।
  क- सैद्धान्तिक राजनीति
  ख- व्यवहारिक राजनीति
* राजनीतिविज्ञान के अध्ययन की निम्न लिखित उपयोगिताएँ हैं।
  (i) मानव अधिकारों एवम् कर्तव्यों का ज्ञान
  (ii) राष्ट्रीय एवम् संवैधानिक इतिहास का ज्ञान

Scanned by Scanner Go

political science
part-I paper-I

Rama kant pandey
S.R.A.P college
Bara chakiya
East champaran
B.R.A.B.U (M42)
Mob- 7033741647.

Scanned by Scanner Go